DATE: 3.7.24
PAGE No. 1

टैंडर हार्टहाई स्कूल, सेक्टर-33-बी, चण्डीगढ़

कक्षा- आठवीं अध्यापिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य पाठ-4 'आज भी खरे हैं तालाब' (लेख) लेखक- अनुपम मिश्र
पाठ-4 का शेष भाग-2 पुस्तक- नवतरंग भाग-8

शेष भाग

यह किस्सा 500 वर्ष पहले एक चरवाहे मेघा का है जो पशुओं का साथ ले उन्हें चराने निकल जाता था। उससे पहले वह सुबह जल्दी उठकर पशुओं को चारा डालता, काम निपटाकर खाना खाता फिर दिन भर का पानी अपने साथ एक कुपड़ी, मिट्टी की चपटी सुराही में ले जाता। शाम को वापस लौटता। एक दिन मेघा घर लौटने को तैयार था, उसकी कुपड़ी में थोड़ा-सा पानी रह गया था। तभी पता नहीं उसे क्या सूझा, उसने फटाफट एक गड्ढा खोदा, उसमें कुपड़ी का पानी डाला और आक के पत्तों से गड्ढे को अच्छी तरह से ढक दिया। वह पशुओं को आज यहाँ तो कल कहीं और चराने ले जाता था। एक निश्चित जगह पर वह पशुओं को नहीं चराता था। दो दिन तक तो वह उस स्थान पर नहीं जा सका। तीसरे दिन जब वह पशुओं को लेकर जंगल की ओर जा रहा था तब वह उसी स्थान पर पहुँचा। उसने आक के पत्तों को हटाया। गड्ढे में पानी तो नहीं था पर उसे ठंडी-ठंडी भाप लगी। ठंडी हवा आई। उसने सोचा कि यहाँ इतनी गरमी में थोड़े-से पानी की नमी बची रह सकती है तो फिर यहाँ तालाब भी बन सकता है। अब मेघा ने अकेले ही तालाब बनाना शुरू किया। वह रोज़ अपने साथ तगड़ी और कुदाल लाता। दिनभर अकेले मिट्टी खोदता और पाल पर डालता। उसके पशु भी आस-पास ही चरते रहते थे। मेघा के पास भीम जैसी शक्ति तो नहीं थी पर उसका यह संकल्प भीम की शक्ति से भी अधिक था। इस कार्य में वह दो वर्ष तक अकेला ही लगा रहा। सपाट रेगिस्तान में पाल के विशाल घेरे को गाँव के लोगों ने



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

DATE 3.7.24
PAGE No. 2

कक्षा- आठवीं विषय-हिंदी साहित्य शिक्षिका- सुमन शर्मा

पाठ-4 'आज भी खरे हैं तालाब' (लेख)

देखा। अब तो रोज़ सुबह गाँव से बच्चे और दूसरे लोग मेघा के साथ मिलकर काम करते। 12 साल तक विशाल तालाब पर काम चलता रहा। इसी प्रकार काम करते हुए मेघा की उमर पूरी हो गई। अब तालाब पर मेघा के बदले उसकी पत्नी गाँव-वालों के साथ काम पर आती थी। छह महीने में तालाब का कार्य पूर्ण हुआ।

बच्चो! अब आप यहाँ तीन मिनट का अंतराल लेंगे तथा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर अपनी हिन्दी साहित्य की अभ्यास-पुस्तिका में लिखेंगे। इस कार्य को करने के लिए पाठ को पढ़ना, लिखना तथा समझना अति आवश्यक है।

प्रश्न 1. मेघा कौन था? उसने किस कार्य की शुरुआत की?
प्रश्न 2. गाँव के लोग किस कार्य में उसकी मदद करने लगे?
प्रश्न 3. मेघा सुबह उठकर क्या कार्य करता था?

बच्चो! अब आपके अंतराल का समय समाप्त हुआ। आशा है कि सभी बच्चों ने पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिख लिए होंगे। अब मैं इन प्रश्नों के उत्तर बताने जा रही हूँ।

उत्तर 1. मेघा एक चरवाहा था। उसने अकेले ही एक गड्ढे में अपनी कुपड़ी के बचे पानी को डाला और तीन दिन बाद गड्ढे से उठी ठंडी हवा से प्रेरित होकर तालाब बनाना शुरू किया।

उत्तर 2. दो वर्ष तक अकेला मेघा तालाब बनाने के लिए कुदाल - तगड़ी से मिट्टी खोदता और पाल पर डालता रहा। रेगिस्तान में पाल का विशाल घेरा देख जब गाँव वालों को पता चला कि मेघा तालाब खोद रहा है तो वे भी

(पृष्ठ-2)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

कक्षा-आठवीं विषय-हिंदी साहित्य शिक्षिका-सुमन शर्मा
पाठ-4 'आज भी खरे हैं तालाब' (लेख)

उत्तर 3. उसके तालाब खोदने के कार्य में मदद करने लगे। मेघा सुबह जल्दी उठकर पशुओं को चारा डालता, काम निपटाकर खाना खाता। तत्पश्चात अपनी कुपड़ी पानी से भरता और अपने पशुओं को लेकर जंगल की ओर निकल पड़ता था।

बच्चो! अब मैं पाठ को आगे पढ़ती हूँ। सब बच्चे ध्यान से पाठ को पढ़ेंगे।

मेघा का संकल्प गाँववालों की खुशहाली बन गया। भाप के कारण शुरू किए गए तालाब का नाम 'भाप' रखा गया। जो बाद में बिगड़कर 'बाप' हो गया। चरवाहे मेघा को, समाज ने 'मेघोजी' की तरह याद रखा और तालाब की पाल पर ही उनकी सुंदर छतरी और उनकी पत्नी की स्मृति में वहीं एक देवली बनाई गई। 'बाप' एक छोटा-सा कस्बा है जो बीकानेर-जैसलमेर के रास्ते में पड़ता है। मई-जून में यहाँ पाल के इस तरफ़ लू चलती है, उस तरफ़ मेघोजी तालाब में लहरें उठती हैं। बरसात के दिनों में तो पानी 4 मील में फैल जाता है।

आज़ादी से पहले अंग्रेज़ आए। उसी दौर में दिल्ली में नल लगने लगे। पहले बड़े शहरों में फिर छोटे शहरों में जगह-जगह बने तालाब, कुएँ और बावड़ियों के बदले नल से पानी आने लगा। सन् 1970 के बाद तो यह डरावने सपने में बदलने लगी थी। इसका कारण कई तालाबों की जगह मोहल्ले, बाज़ार, स्टेडियम खड़े कर दिए गए थे। तालाब हथियाकर बनाए गए नए मोहल्लों में वर्षा के दिनों में यहाँ पानी भर जाता था, जिससे शहरों में जल संकट का भय बना रहता था।

अब बच्चो! मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछूँगी उनके उत्तर लिखने के लिए आप यहाँ तीन मिनट का अंतराल लेंगे फिर उनके उत्तर लिखेंगे।

प्रश्न 1. मेघा का कौन-सा संकल्प गाँववालों की खुशी का

(पृष्ठ-3)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

कक्षा-आठवीं विषय-हिंदी साहित्य शिक्षिका- सुमन शर्मा
पाठ-4 'आज भी खरे हैं तालाब' (लेख)

का कारण बना?

प्रश्न 2. 'सन् 1970 के बाद शहरों की स्थिति डरावने सपने में क्यों बदलने लगी?

बच्चो! अब आपके अंतराल का समय समाप्त हुआ। पूछे गए प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार हैं

उत्तर 1. मेघा ने एक छोटे-से गड्ढे में पानी डाला और उसमें से उठी भाप ने उसे तालाब बनाने की प्रेरणा दी। वह अकेला ही तालाब बनाने में जुट गया और लगातार दो वर्ष तक वह इस कार्य को करता रहा। उसमें भीम जैसी शक्ति तो नहीं थी लेकिन भीम की शक्ति जैसा संकल्प था। यही संकल्प गाँववालों की खुशी का कारण बना।

उत्तर 2. सन् 1970 के बाद जगह-जगह बने तालाब, कुएँ और बावड़ियों को गाद (मिट्टी, मलबा) से पाट दिया गया। उन पर नए मोहल्ले, बाज़ार, स्टेडियम, कारखाने आदि बन गए थे। इस कारण तालाब आदि ढक गए और शहरों से वर्षा का पानी निकलने की समस्या खड़ी हो गई, अब यह पानी घरों में घुसने लगा। इस प्रकार शहरों की स्थिति डरावने सपने में बदलने लगी।

अब बच्चो! मैं पाठ को आगे पढ़ती हूँ। सब बच्चे ध्यान से पाठ को सुनेंगे। अब देखिए क्या हुआ— शहरों को पानी तो चाहिए था, पर पानी दे सकने वाले तालाब नहीं। कुछ शहरों ने ट्यूबवैल के द्वारा एवं कुछ शहरों ने दूर बहने वाली नदी से पानी उठाकर लाने के बेहद खर्चीले तरीके अपनाए हैं। इससे नगरपालिकाओं पर करोड़ों रुपए के बिजली के बिल भी बढ़ चुके हैं। इंदौर के पड़ोस में बसे देवास शहर का किस्सा विचित्र है। पिछले 30 वर्ष में यहाँ

(पृष्ठ-4)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

DATE 3.7.24
PAGE No. 5

कक्षा- आठवीं विषय- हिंदी साहित्य शिक्षिका- सुमन शर्मा
पाठ-5 'आज भी खरे हैं तालाब' (लेख)

छोटे- बड़े कई तालाब थे परन्तु मकान, कारखाने आदि बनाने के लिए इन तालाबों को भर दिया गया। बाद में पता चला कि यहाँ रहने वाले लोगों के लिए पानी का कोई स्रोत ही नहीं बचा। सब शहर छोड़कर जाने लगे। अब शहर के लिए पानी तो जुटाना था पर समस्या यह थी कि पानी कहाँ से लाएँ? देवास के तालाबों, कुओं के बदले रेलवे स्टेशन पर दस दिन तक दिन-रात काम चलता रहा।

25 अप्रैल 1990 को इंदौर से 50 टैंकर पानी लेकर रेलगाड़ी देवास आई तो लोगों ने ढोल-नगाड़े बजाकर इस योजना का स्वागत किया। लेकिन यह योजना पहले टैंकरों से रेलगाड़ी द्वारा पानी मँगाना फिर पंपों के सहारे टंकियों में चढ़ाने का खर्च आदि को मिलाकर इंदौर को दूध के भाव पड़ेगी।

आज भी देश भर में कोई आठ से दस लाख तालाब भर रहे हैं। समाज में तालाबों की स्मृति अभी भी शेष है। स्मृति की यह मज़बूती पत्थर की मज़बूती से ज़्यादा मज़बूत है। कितने शहर, गाँव इन्हीं तालाबों के सहारे हैं। कई नगरपालिकाएँ भी इन्हीं तालाबों के कारण खड़ी हैं। सिंचाई विभाग इन्हीं तालाबों के सहारे खेतों में पानी पहुँचा रहे हैं। अलवर जिले के 'बीजा की डाह' जैसे अनेक गाँवों में आज भी नए तालाब खोदे जा रहे हैं क्योंकि यह स्वर आज भी उनके कानों में गूँज रहा है — 'अच्छे-अच्छे काम करते जाना।'

बच्चो! यह पाठ यहाँ समाप्त हुआ। अब मैं पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ बताऊँगी।
शब्दार्थ:— (1) ढोर - पशु (2) सपाट - समतल
(3) कुपड़ी - छोटी मटकी (4) चपटी - समतल
(5) सुराही - मिट्टी की बनी लंबी गरदन वाली मटकी

(पृष्ठ-5)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

DATE 3.7.24
PAGE No. 6

कक्षा- आठवीं हिंदी साहित्य शिक्षिका- सुमन शर्मा
पाठ-4 "आज भी खरे हैं तालाब"

जिसमें पानी भरते हैं। (6) आक - एक प्रकार का पौधा, मदार का पौधा (7) नमी - गीलापन (8) कुदाल - मिट्टी खोदने वाला औजार (9) संकल्प - पक्का इरादा, दृढ़ निश्चय (10) चरवाहे - पशुओं को चराकर जीवन-यापन करने वाला (11) पाल - पानी को भरने के लिए गड्ढे के चारों ओर बनाई गई मेड़ या रोक (12) स्मृति - याद (13) देवली - मिट्टी का बना ऊँचा चबूतरा, स्थान (14) कस्बा - छोटा शहर (15) तिगुनी - तीन गुणा (16) बगल - पास में या समीप (17) मील - लगभग डेढ़ किलोमीटर की दूरी (18) प्रबंध - इंतज़ाम (19) नियंत्रण - काबू में (20) बावड़ी - वह चौड़ा छोटा कुआँ जिसमें पानी तक पहुँचने के लिए सीढ़ियाँ बनी रहती हैं (21) उपेक्षा - तिरस्कार (22) गाद - मिट्टी गीली, बेकार मलबा (23) स्रोत - उद्गम स्थान, साधन, प्रपात, ज़रिया (24) बनक - बनावट (25) शेष - बचे हुए (26) गोताखोर - जलाशय या तालाब में गोता लगाने वाला व्यक्ति।

निर्देश :- सभी बच्चे इस पाठ को तथा इसके शब्दार्थ को उच्च स्वर में पढ़ेंगे व याद करेंगे। अभिभावकों से अनुरोध है कि वे अपने बच्चे की पाठ को पढ़ने व समझने में मदद करें।

गृहकार्य :- सभी बच्चे पृष्ठ - 32 पर दिए प्रश्न पाठ बोध - संक्षेप में - लिखने का प्रयास करेंगे। मेरे द्वारा कराए गए शब्दार्थ को भी अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखेंगे व याद करेंगे।
धन्य वाद।

समाप्त

(अंतिम पृष्ठ)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner